शल्यपर्व कथासार

शल्यपर्व में ३ उपपर्व, ६५ अध्याय, ३६५९ श्लोक हैं।

अर्जुन के द्वारा महावीर कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन शोक समुद्र में डूब गया और सब ओर से निराश हो गया एवं बचे हुए राजाओं को अपने अपने शिबिर में लाया। दैव एवं भवितव्यता के प्रबल मानकर संग्राम जारी रखने का दृढ निश्चय करके पुनः युद्ध के लिए प्रस्थान किया। रणभूमि में वीरों के रथ और टूटी पडी थी। सवारों सहित हाथी और पैदल सैनिक मार डाले गये थे। यह सब देखकर दुर्योधन का मन शोक में डूब गया। उसे देखकर कृपाचार्य के मन में बडी दया आयी। उन्होंने उसकी दीनता देखकर समझाया एवं कहा कि - युद्ध में शत्रु को मारना या उसके हाथों में मारा जाना दोनों ही उत्तम धर्म हैं और युद्ध से भागना महान पाप होता है। भीष्म, द्रोण एवं पुत्र लक्ष्मणकुमार भी इस संसार में नहीं हैं। युद्ध में शत्रु पर विजय पाना ही असम्भव सा लगता है। अतः यह उचित होगा कि युधिष्ठिर के समक्ष नत मस्तक होकर अपना राज्य प्राप्त कर लें। युधिष्ठिर दयालु है। वे तुम्हें राज्य पर प्रतिष्ठित कर सकते हैं। दुर्योधन को कृपाचार्य की बात पसन्द नहीं आई। उन्होंने कहा कि आप की बातें मेरे मन को उसी तरह पसन्द नहीं आती जैसे मरणासन्न व्यक्ति को दवा अच्छी नहीं लगती है। हम लोगों ने युधिष्ठिर के साथ छल किया है। हम ने जुए में जीतकर उन्हें निर्धन बना दिया। ऐसी दशा में वे हम लोगों पर विश्वास कैसे कर सकते हैं? श्रीकृष्ण मेरे यहाँ दूत बनकर आये थे परन्तु मैं ने उन्हें धोखा दिया। अब वे मेरी बात कैसे मानेंगे। सभा में बलात्कारपूर्वक लायी गयी द्रौपदी ने विलाप किया और पाण्डवों से भी राज्य छीन लिया गया था। इस बर्ताव को कैसे वे लोग भूल पायेंगे। अभिमन्यु को मारकर हम सब उनके अपराधी हैं। अतः वे हमें क्षमा नहीं कर सकते हैं। अतः अब सन्धि का अवसर नहीं रह गया है। अच्छी तरह युद्ध करना ही श्रेय है। यह समय कायरता दिखाने का नहीं। उत्साहपूर्वक युद्ध करना ही है। जिसके आचरण श्रेष्ठ है, जो युद्ध से कभी पीछे नहीं हटते, अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करके दिखाते हैं उनका स्वर्ग में निवास होता है। युद्ध में प्राण देनेवाले को पितृगण एवं देवताओं की दृष्टि में सम्मानित होते हैं। शूरवीर युद्ध में प्राणों का परित्याग करके इन्द्र लोक में प्रतिष्ठित होते हैं। भाइयों और पितामहों को मारकर यदि मैं अपने प्राणों की रक्षा करूँ तो सारा संसार मेरी निन्दा करेगी। युधिष्ठिर के पैरों में पडने पर जो राज्य मिलेगा इससे क्या लाभ? अतः युद्ध के द्वारा स्वर्ग प्राप्त करना ही श्रेय है। दुर्योधन की यह बात सुनकर क्षत्रियों ने उसका आदर किया एवं धन्यवाद भी दिया। पराजय का शोक छोडकर पराक्रम दिखाने का निश्चय किया।

योद्धागण एकत्रित होकर किसी को सेनापति बनाकर शत्रु के साथ युद्ध करने हेतु दुर्योधन को सलाह दिये। अश्वत्थामा ने सेनापति के लिए शल्य को योग्य बताते हुए कहा कि वे उत्तम गुण सम्पन्न सुन्दर रूप, तेज, यश, श्री एवं समस्त सद्गुणों से सम्पन्न हैं। अपने सगे भानजों (बहन के पुत्र) को छोड़कर

आपके पक्ष में युद्ध किया। शल्य कार्त्तिकेय के समान भारी सेना से सम्पन्न है। दुर्योधन ने अनुरोध पूर्वक कहा कि - आप हमारे शूरवीरों के सेनापति होने से मन्दबुद्धि पाण्डव और पाञ्चाल अपने मन्त्रियों के सहित उद्योगशून्य हो जायेंगे। दुर्योधन की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए शल्य बोले हे राजन्! तुम मुझसे जो कुछ चाहते हो मैं उसे पूर्ण
करूँगा; क्योंकि मेरे प्राण, राज्य और धन सब तुम्हारा प्रिय करने के लिए है। उनके ऐसा कहने पर राजा दुर्योधन ने शास्त्रीय विधि के अनुसार सेना के मध्य भाग में मद्रराज शल्य को सेनापति के पद पर अभिषिक्त किया। उनके अभिषेक हो जाने पर सेना में बड़े जोर से सिंहनाद होने लगा और बाजे बज उठे। शल्य ने प्रतिज्ञा की कि आज मैं रणभूमि में पाण्डव सहित समस्त पाञ्चालों को मार डालूँगा या स्वयं ही मारा जाकर स्वर्गलोक में जा पहुँचूँगा। आज सब लोग मुझे रणभूमि में निर्भय विचरते देखें। आज समस्त पाण्डव, श्रीकृष्ण, सात्यकि, पाञ्चाल और चेदिदेश के योद्धा, द्रौपदी के सभी पुत्र, धृष्टद्युम्न तथा शिखण्डी मेरा पराक्रम एवं धनुष का महान बल अपनी आँखो से देखें। आज मैं पाण्डवों की सेनाओं को चारों ओर भगा दूँगा। द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण से भी बढकर पराक्रम दिखाता और जूझता हुआ रणभूमि में सब ओर विचरण करूँगा। शल्य के सेनापति बनने पर पाण्डवों के पक्ष में चिन्ता छा गई। भगवान् श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा - हे नरेश्वर! मैं बहुत सोचने पर भी शल्य के अनुरूप सिंह के समान कोई नहीं है। आज आपके सिवा दूसरा कोई भी ऐसा नहीं दीखता जो शल्य के सम्मुख होकर युद्ध कर सके। देवताओं सहित इस सम्पूर्ण जगत में आपके सिवा दूसरा कोई ऐसा पुरुष नहीं है जो रण में कुपित हुए महाराज शल्य को मार सके। आप क्षत्रिय धर्म को सामने रखते हुए मद्रराज शल्य को मार डाले। श्रीकृष्ण के ऐसा कहने पर युधिष्ठिर युद्ध के लिए तैयार हुए एवं दोनों पक्षों के सैनिकों में भयानक घोर युद्ध छिड़ गया।

इसी समय नकुल ने कर्णपुत्र चित्रसेन पर आक्रमण किया। चित्रसेन के बाणों से नकुल के घोड़ों की मृत्यु हो गई और धनुष कट गया। नकुल ढाल - तलवार लेकर सिंह के समान नीचे आ गये एवं चित्रसेन के रथ के समीप पहुँचे और मुकुट सहित चित्रसेन के मस्तक को काट दिया। तत्पश्चात् चित्रसेन के दोनों भाई नकुल पर बाण समूहों की वर्षा करने लगे। नकुल ने पहले उनके घोड़ों को मार दिया एवं तत्पश्चात् धनुष काट दिया। एक भाई का नाम सत्यसेन एवं दूसरे का सुषेण था। नकुल ने सत्यसेन के वक्षस्थल को विदीर्ण कर दिया और वह प्राणशून्य हो देख सुषेण क्रोध से व्याकुल हो उठा और बाणों की वर्षा करने लगा। नकुल अपने बाणों से देखते देखते सुषेण का मस्तक काट गिराया और सुषेण का शरीर पृथ्वी पर गिर पडा। इसी प्रकार दोनों सेनाओं के बीच में युद्ध भीषण रूप लेता गया। उसके बाद शल्य और भीमसेन अपने हाथों में गदा लेकर युद्ध करने लगे। जब मद्रराज अपनी गदा से भीमसेन की गदा पर चोट की तब उससे आग की लपटें निकलने लगी। इसी प्रकार भीमसेन की गदा से

ताडित होकर शल्य की गदा भी अंगारें बरसाने लगी। इसके बाद युधिष्ठिर के साथ शल्य का भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में दुर्योधन के द्वारा पाण्डव पक्ष के चेकितान का एवं युधिष्ठिर के द्वारा कौरव पक्ष के चन्द्रसेन एवं द्रुमसेन का वध हुआ। तदुपरान्त शल्य युद्ध क्षेत्र में सम्पूर्ण रूप से छा गये। युधिष्ठिर के सामने सिंह के समान गर्जना करने लगे। युद्धभूमि में बाणों से आच्छादित पाण्डवों के महारथीगण शल्य की ओर बढ़ने में समर्थ न हो सके। पाण्डव पीछे हटकर अन्यत्र युद्ध करने लगे। इसके बाद अर्जुन के साथ अश्वत्थामा का युद्ध छिड़ गया। उस युद्ध में पाञ्चाल के महान् वीर सुरथ अश्वत्थामा के द्वारा मारे गये। इसके बाद दुर्योधन और धृष्टद्युम्न का, अर्जुन और अश्वत्थामा तथा शल्य के साथ नकुल और सात्यकि आदि का घोर
संग्राम हुआ। इसी तरह मद्रनरेश शल्य एवं युधिष्ठिर के बीच भयानक युद्ध प्रारंभ हो गया। उस समय धर्मराज के घोड़े और सारथि भी मारे जा चुके थे केवल रथ शेष था। उसी पर खड़े होकर उन्होंने शल्य पर शक्ति के प्रयोग का विचार किया एवं शल्य के वध का संकल्प लिया। उस ने देदीप्यमान शक्ति को शल्य के ऊपर वेग से चलाया। वह शक्ति राजा शल्य के मर्म स्थानों को विदीर्ण करके उनके उज्ज्वल एवं विशाल वक्ष स्थल को चिरती हुई धरती में समा गई। शल्य के मारे जाने पर उनके छोटे भाई ने युधिष्ठिर पर आक्रमण किया। धर्मराज ने उसे बाणों से बींध डाला एवं उसके धनुष एवं ध्वज को काट दिया। उसके बाद राजकुमार के मस्तक को काट गिराया। तदनन्तर कौरव पक्ष के कृतवर्मा ने युधिष्ठिर के साथ युद्ध छेड़ दिया। युधिष्ठिर ने कृतवर्मा के घोडों का संहार किया एवं उसके प्राण संकट में देखते हुए अश्वत्थामा कृतवर्मा को दूर हटा ले गया।

उसके बाद कौरवों के पक्ष के राजाओं में श्रेष्ठ शाल्व ने पाण्डवों के ऊपर आक्रमण कर दिया। शिबि वंश के प्रमुख वीर सात्यकि ने एक तीखे भल्ल से शाल्वराज का सिर काट दिया। कौरव पक्ष की सेनाओं को हारते हुए देखकर शकुनि ने मर्यादा शून्य एवं कूट युद्ध प्रारम्भ किया। परन्तु उनको पराजय का मुँह देखना पड़ा। उसी प्रकार युद्ध चलता रहा। भीमसेन ने दुर्योधन के ग्यारह भाईयों दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जैत्र, भूरिबल, रवि, जयत्सेन, सुजात, दुर्विषह, शत्रुनाशक, दुर्विमोचन एवं दुष्प्रधर्ष को मार डाला।

कौरव पक्ष के प्रमुख वीर त्रिगर्तराज सुशर्मा युद्धभूमि में युद्ध करने हेतु उतर पडा जिनका युद्ध अर्जुन के साथ हुआ। त्रिगर्तराज अपने सभी महारथियों के साथ मिलकर बाणों की वर्षा से गगन आच्छादित करने लगे। अर्जुन यमदण्ड के समान भयंकर बाण हाथ में लेकर सुशर्मा को मार डाला।

उधर शकुनि और सहदेव के बीच में युद्ध आरम्भ हो गया। सुबलपुत्र शकुनि ने अपनी प्रास से सहदेव के मस्तक पर गहरी चोट पहुँचायी। उस चोट से व्याकुल होकर सहदेव रथ की बैठक में धम्म से बैठ गये। उनकी ऐसी अवस्था देखकर प्रतापी भीमसेन अत्यन्त कुपित हो उठे और शर वर्षा करके सबको विदीर्ण कर दिया। इतने में ही स्वस्थ होकर सहदेव ने बाणों से शकुनि को बींध

डाला और उनके घोडों को मारकर धनुष भी टुकडे टुकडे कर डाला। रणभूमि में पिता की रक्षा करते हुए उलूक ने भीमसेन को एवं सहदेव को बाणों से क्षत विक्षत करने लगा। तब प्रतापी सहदेव ने भल्ल मारकर अपने ऊपर आक्रमण करनेवाली उलूक का मस्तक काट दिया।

सहदेव के हाथ से मारा गया उलूक युद्ध में पाण्डवों को आनन्दित करता हुआ रथ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। अपने पुत्र को मारा गया देखकर शकुनि का गला भर आया। वह लम्बी साँस खींचकर, आँखों को आँसू से भरकर उच्छ्वास लेता हुआ दो घड़ी तक चिन्ता में डूब रहा। उसके बाद सहदेव पर बाणों से प्रहार किया। सहदेव ने भी प्रत्याक्रमण कर उनके धनुष को काट डाला और क्रोध से शकुनि को घायल कर दिया एवं घोडों का मारकर उसके छत्र, ध्वज और धनुष को काटकर सिंह के समान गर्जना की और द्यूतक्रीडा में उनके द्वारा किये गये कुकार्यों का स्मरण किया। उसके बाद सुवर्णभूषित एवं सूर्य के समान तेजस्वी बाण को शकुनि
के ऊपर छोडा एवं शकुनि के मस्तक को काट डाला और वह प्राणशून्य होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

अब दुर्योधन के पास द्रोण पुत्र अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य छोड़कर और कोई महारथी जीवित नहीं थे। ऐसी स्थिति में अपने को असहाय सा समझकर अत्यन्त दयनीय दशा में प्राण बचाने के लिए पानी से भरे हुए सरोवर में दुर्योधन ने प्रवेश किया और माया से उसके पानी को बाँध दिया। जब इस बात के बारे में अश्वत्थामा को ज्ञात हुआ उन्होंने अपने को धिक्कार करते हुए कहा कि - दुर्योधन नहीं जानते हैं कि हम तीन महारथी अब जीवित हैं और शत्रुओं से लडने के लिए पर्याप्त हैं। इसके बाद ये तीन महारथी दुर्योधन से मिलकर रणनीति तैयार करने के उद्देश्य से सरोवर के पास पहुँचे जहाँ दुर्योधन छिपा था। दुर्योधन उन लोगों से समझाते हुए कहा कि आप लोग थकावट दूर कर लें। मैं भी थक चुका हूँ। अब पाण्डवों का दल बड़ा हुआ है। इसलिए इस समय मेरी युद्ध करने की रुचि नहीं रह गई है। आप लोगों के मन में युद्ध के लिए जो महान उत्साह बना हुआ है यह कोई अद्भुत बात नहीं है। तथापि यह पराक्रम प्रकट करने का समय नहीं है। आज एक रात विश्राम करके कल सबेरे रणभूमि में आप लोगों के साथ रहकर मैं शत्रुओं के साथ युद्ध करूँगा।

इधर पाण्डव दुर्योधन के बारे में पता लगा रहे थे। व्याधों ने तीन महारथियों के साथ चर्चा करते दुर्योधन की अवस्थिति के बारे में पाण्डवों को सूचित किया। दुर्योधन का पानी से भरे सरोवर में घुसना सुनकर राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को आगे करके शीघ्र ही वहाँ से चल दिये एवं उस भयंकर द्वैपायनह्रद के तट पर जा पहुँचे जिसके भीतर दुर्योधन छिपा हुआ था। उसका जल शीतल और निर्मल था और देखने में समुद्र के समान लगा था। उसी के भीतर माया द्वारा जल को स्तंभित करके दैव योग एवं अद्भुत विधि से वह विश्राम कर रहा था और किसी मनुष्य के द्वारा उसे देखना अत्यन्त कठिन था। तदनन्तर पानी के

भीतर बैठ हुए दुर्योधन ने मेघ की गर्जना के समान भयंकर शब्द सुना।

सरोवर के पास पहुँचकर युधिष्ठिर ने देखा कि दुर्योधन ने जल को स्तम्भित कर रखा है और माया का प्रयोग किया है। यह जानकर युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा - हे दुर्योधन! तुम किस लिए पानीं में यह अनुष्ठान आरम्भ किया है। सम्पूर्ण क्षत्रिय और अपने कुल का संहार कराकर आज अपने प्राण बचाने की इच्छा से तुम जलाशय में घुसे बैठे हो। उठो और हम लोगों के साथ युद्ध करो। तुम्हारे पहले का दम्भ और अभिमान कहाँ चला गया? अब तुम भयभीत होकर पानी में सो रहे हो, तब तुम्हारे कथित शौर्य को मैं व्यर्थ समझता हूँ। युद्ध न करना या वहाँ से पीठ दिखा कर भागना यह सनातन धर्म नहीं है। नीच पुरुष ही ऐसे कुमार्ग का आश्रय लेते हैं। इस से स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होगी। इस प्रकार युधिष्ठिर की उलटना पूर्ण बात सुनकर जल में स्थित दुर्योधन बोला कि मैं प्राणों के भय से भागकर यहाँ नहीं आया हूँ। मेरे पास न तो रथ है और न तरकस। मेरे पार्श्वरक्षक भी मारे जा चुके हैं। मेरी सेना नष्ट हो गई है, और मैं युद्ध स्थल में अकेला रह गया था। इस दशा में मुझे कुछ देर तक विश्राम करने की इच्छा हुई। तुम लोग भी कुछ देर तक विश्राम कर लो। तत्पश्चात् मैं उठकर युद्धभूमि में तुम लोगों के साथ युद्ध करूँगा। मैं जिसके लिए राज्य चाहता था, मेरे सभी भाई मारे जा चुके हैं।

भूमण्डल के समस्त क्षत्रियों का संहार हो गया है। यहाँ के सभी रत्न नष्ट हो गये हैं। अतः विधवा स्त्री के समान हीन हुई इस पृथ्वी का उपभोग करने के लिए मेरे मन में तनिक भी उत्साह नहीं है। इसी प्रकार दुर्योधन के वचन सुनकर युधिष्ठिर बोले - तुम जल में स्थित होकर आर्तपुरुष के समान प्रलाप न करो। चिड़ियों के चहचहाने के समान तुम्हारी यह बात मेरे मन में कोई अर्थ नहीं रखती है। मुझे संग्राम में जीतकर इस पृथ्वी का पालन करो। पहले तुम सूई की नोक के जितना छिद सके, भूमि का उतना भाग भी मुझे नहीं दे रहे थे। फिर आज यह सारी पृथ्वी कैसे दे रहे हो? युधिष्ठिर का इस प्रकार अनेक बातों को सुनकर दुर्योधन विषम परिस्थिति में पड़ गया और बार बार साँस लेता रहा। जल के भीतर ही मनन करके युद्ध का निश्चय किया एवं युधिष्ठिर से बोला मैं अकेला थका हूँ। रथहीन और वाहन शून्य हूँ। तुम्हारी संख्या अधिक है। तुमने रथ पर बैठकर नाना प्रकार अस्त्रशस्त्रों से मुझे घेर रखा है। अतः तुम्हारे साथ मैं अकेला पैदल और अस्त्रशस्त्र रहित कैसे युद्ध कर सकता हूँ। तुम लोग एक एक करके मुझ से युद्ध करो। युद्ध में बहुत से वीरों के साथ एक को लड़ने के लिए विवश करना न्यायोचित नहीं है। मुझे किसी पाण्डव एवं पाञ्चाल से भय नहीं है। मैं अकेला ही तुम सब को आगे बढने से रोक दूँगा। युधिष्ठिर बोले - एक एक के साथ भिडकर युद्ध करना चाहते हो तो ऐसा ही सही। जो हथियार तुम्हें पसन्द हो, उसी को लेकर हम लोगों में से किसी एक के साथ बारी बारी से युद्ध करो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि हम में से एक का भी वध कर देने पर सारा राज्य तुम्हारा हो जायेगा। यदि तुम मारे गये तो स्वर्गलोक प्राप्त करोगे। दुर्योधन बोला

कि मैं गदा युद्ध ही पसन्द करूँगा। तुम में से कोई भी एक वीर जो मुझे जीतने का अभिमान रखता है वह पैदल ही गदा द्वारा मुझ से युद्ध करें। ऐसा बोलता हुआ दुर्योधन कंधे पर लोहे की गदा रखकर बंधे हुए जल का भेदन करके प्रतापी सूर्य के समान ऊपर उठा। उसके बाद भीमसेन के साथ उनका वाग्युद्ध छिड़ गया। इस प्रकार भीम-दुर्योधन के बीच गदा युद्ध होना निश्चित हुआ। इस समय दोनों शिष्यों का संग्राम में उपस्थित होकर उन का समाचार सुनने के लिए बलराम जी वहाँ आ पहुँचे। उन्हें देखकर श्रीकृष्ण सहित पाण्डव बड़े प्रसन्न हुए एवं विधिपूर्वक पूजा की। बलराम जी बोले - मैं तीर्थयात्रा के लिए निकला हूँ। आज मुझे बयालीस दिन हो गये। मैं अपने दोनों शिष्यों का गदा युद्ध देखना चाहता हूँ। तदनन्तर गदा हाथों में लेकर दुर्योधन एवं भीमसेन युद्धभूमि में उतरे।

इस बीच में बलराम जी की तीर्थयात्रा एवं प्रभास क्षेत्र के प्रभाव वर्णन के प्रसंग में चन्द्रमा के शापमोचन की कथा विस्तृत रूप में वर्णित है। इस प्रकार तीर्थ वर्णन प्रसंग में बलराम जी बोले समन्तपञ्चक भूमि देवलोक में प्रजापति की उत्तरवेदी के नाम से प्रसिद्ध है। त्रिलोकी के उस परम पुण्यतम सनातन तीर्थ में युद्ध करके मृत्यु को प्राप्त हुआ मनुष्य निश्चय ही स्वर्गलोक में जायेगा। बहुत अच्छा यह कहकर युधिष्ठिर समन्तपञ्चक तीर्थ की ओर चल दिये। उस समय अमर्ष से भरा हुआ राजा दुर्योधन हाथ में विशाल गदा लेकर पाण्डवों के साथ पैदल ही चला। वे दोनों बडे बडे सींगवाले दो साँडों के समान एक दूसरे से भिड़ गये। एक दूसरे को जीतने की इच्छा रखनेवाले उन दोनों में भयंकर एवं रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। भीमसेन की गदा यमदण्ड के समान भयंकर थी। युद्ध के समय भीमसेन की गदा नीचे गिर गई। इसी
समय दुर्योधन ने बार बार उछलकर भीमसेन को धोखा देकर उस की छाती में गदा मारी और भीमसेन उस घात से मूर्च्छित हो गये। फिर संज्ञा पाकर दुर्योधन पर आक्रमण किया। दोनों के सारे अंग गदा के प्रहार से जर्जर हो गये और दोनों ही खून से लथपथ हो गये। दुर्योधन के ऊपर आक्रमण करके भीम ने सिंह के समान गर्जना की और दुर्योधन के जाँघ पर बडे वेग से गदा चलायी। गदा वज्रपात के समान गिरी और दुर्योधन की जंघा को तोड दिया और वह पृथ्वी पर गिर पडा। दुर्योधन के गिर जाने पर पाण्डव मन ही मन प्रसन्न हुए और निकट जाकर उसे देखने लगे। युधिष्ठिर बोले - तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। तुम्हारी प्रशंसनीय मृत्यु हो रही है। अब तो सभी अवस्थाओं में इस समय हम लोग शोचनीय हो गये हैं। क्योंकि प्रिय बन्धु बान्धवों से रहित हमें दीनता पूर्ण जीवन व्यतीत करना पडेगा।

भीमसेन के द्वारा दुर्योधन के मस्तक पर पैर का प्रहार हुआ देखकर बलराम को बडा क्रोध हुआ। एवं अत्यन्त क्रोधित होकर आर्तनाद करते हुए कहा - भीमसेन तुम्हें धिक्कार हो। इस धर्म युद्ध में नाभि से नीचे जो प्रहार किया गया है, यह गदा युद्ध में कभी नहीं देखा गया है। नाभि के नीचे प्रहार करके तुमने स्वेच्छाचार किया है। ऐसा कहकर अपना हल लेकर भीमसेन की ओर दौडे। उस

समय श्रीकृष्ण ने बलराम के भुजाओं को प्रयत्न से पकडा और कहा - भैया! दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ बहुत छल कपट किया। एक ओर भीमसेन ने प्रतिज्ञा ली थी कि वह दुर्योधन के दोनों जाँघों के तोडेगा। दूसरी ओर महर्षि मैत्रेय ने भी दुर्योधन को शाप दे रक्खा था कि भीमसेन अपनी गदा से उनके दोनों जाँघे तोड डालेंगे। अतः मैं भीमसेन का दोष नहीं देखता हूँ। इसी प्रकार अनेक तर्कपूर्ण वचनों से श्रीकृष्ण जी ने बलराम जी को शान्त कराया।

भीमसेन ने क्रोध से भरकर राजा दुर्योधन के मस्तक पर पैरों से टुकराया था, यह बात युधिष्ठिर को अच्छी नहीं लगी थी। और कुल के संहार होने से वे प्रसन्न नहीं थे। परन्तु अधर्म मार्ग में चल रहा दुर्योधन का वध भी चाहते थे। युधिष्ठिर भीमसेन से बोले - तुम ने वैर का अन्त कर दिया। राजा दुर्योधन मारा गया और श्रीकृष्ण के मत का आश्रय लेकर हमने यह सारी पृथ्वी जीत ली। भाग्यवश तुम विजयी हुए और सौभाग्य से ही तुम ने शत्रुओं को मार गिराया।

तत्पश्चात् पाण्डवों ने दुर्योधन के शिबिर में प्रवेश किया। स्वामी के मारे जाने से दुर्योधन शिबिर श्रीहीन हो गया था। उसके बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा - तुम गाण्डीव धनुष को और बाणों से भरे हुए अक्षय तरकसों को उतार लो। रथ से स्वयं उतर जाओ मैं बाद में उतरूँगा। ऐसा करने में ही तुम्हारी भलाई है। समस्त प्राणियों के ईश्वर परमात्मा श्रीकृष्ण के उतरते ही गाण्डीव धारी अर्जुन का ध्वजस्वरूप दिव्य वानर उस रथ से अन्तर्धान हो गया। उसके बाद वह रथ तुरन्त आग से प्रज्ज्वलित हो उठा। रथ को भस्मीभूत देखते हुए समस्त पाण्डव आश्चर्य चकित हो उठे। अर्जुन हाथ जोड़ भगवान के चरणों में प्रणाम करके रथ प्रज्ज्वलित होने का रहस्य को पूछा। श्रीकृष्ण ने कहा - दिव्यास्त्रों से रथ पहले ही दग्ध हो चुका था, तुम आज अभीष्ट पूरा कर चुके हो। परन्तु मेरे बैठे रहने के कारण वह समराङ्गण में भस्म होकर गिर न सका। उसके बाद श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर धृतराष्ट्र एवं गान्धारी को आश्वासन देकर पुनः पाण्डवों के पास लौट आये।

उधर रणक्षेत्र में दुर्योधन की जाँघ टूट जाने के कारण वह धरती पर गिरकर धूल में सन गया था। भीमसेन द्वारा किये गये क्रूर कर्म एवं अधर्म का स्मरण करते विलाप कर रहा था। सन्देशवाहक ने अश्वत्थामा से भीमसेन का अन्यायपूर्ण व्यवहार एवं दुर्योधन की दुरवस्था के बारे में बताया।

सन्देशवाहक के मुख से दुर्योधन के विषय में विषादपूर्ण समाचार सुनकर अश्वत्थामा, कृपाचार्य एवं कृतवर्मा तुरन्त ही युद्धभूमि में आये एवं देखे कि दुर्योधन के भौंहे तनी हुई थी, आँखें क्रोध से चढी हुई थी और गिरे हुए व्याघ्र के समान वह अमर्ष से भरा हुआ दिखायी दे रहा था। वे लोग रथ से उतर कर जमीन में दुर्योधन के पास बैठ गये। दुर्योधन की अवस्था देखकर अश्वत्थामा के आँखों में आँसू भर आये और कहा कि जो समस्त भूमण्डल पर अपना एकछत्र शासन चला रहा था, आज वह निर्जन वन में कैसे पडे हैं। इस प्रकार अश्वत्थामा की बात सुनकर दुर्योधन के नेत्रों से आँसू बहने लगे एवं सभी से बोला - आप लोगों को

मुझ पर स्वाभाविक स्नेह है, इसलिए मेरी मृत्यु से आप लोगों को जो दुःख और संताप हो रहा है वह नहीं होना चाहिए। मैं श्रीकृष्ण के वचन मानकर क्षत्रिय धर्म से विचलित नहीं हुआ। मैं ने उस धर्म का फल प्राप्त किया है। इसलिए मैं किसी प्रकार भी शोक के योग्य नहीं हूँ।

अश्वत्थामा बोला - नीच पाण्डवों ने अत्यन्त क्रूरता पूर्ण कर्म के द्वारा मेरे पिता का वध किया उसके कारण मैं उतना सन्तप्त नही हूँ जैसा आज आपके वध के कारण मुझे कष्ठ हो रहा है। मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि श्रीकृष्ण के देखते देखते समस्त शत्रुओं को यमलोक पहुँचा दूँगा। द्रोणपुत्र द्वारा मन को प्रसन्न करनेवाले वचनों को सुनकर दुर्योधन ने कृपाचार्य से कहा आप मेरा प्रिय करना चाहते हैं तो मेरी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति पद पर अभिषेक किया जाए। इसके साथ ही शल्य पर्व की कथा समाप्त हुई।

।। शल्यपर्व कथासार समाप्त ।।